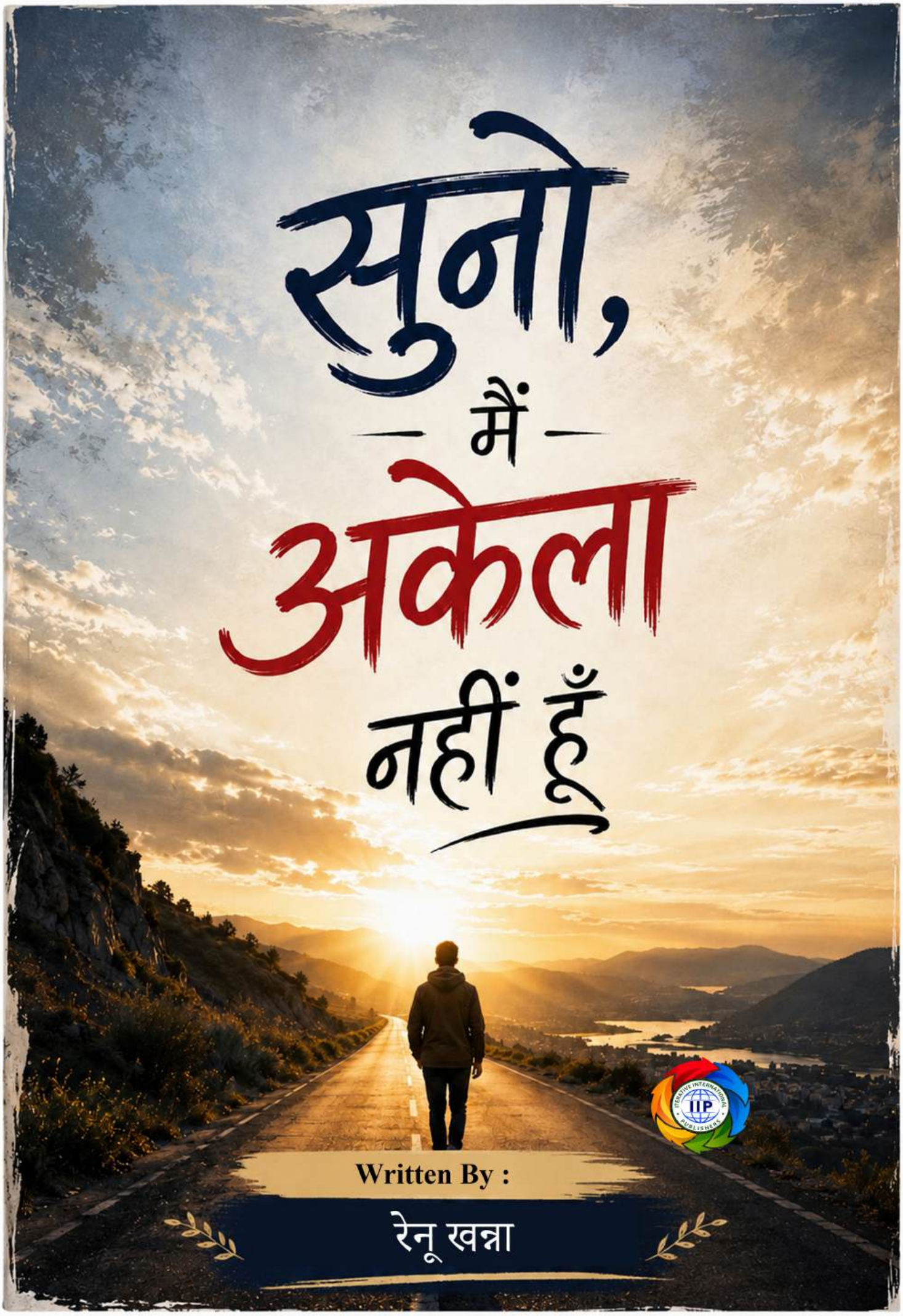

सुनो,
मैं
अकेला
नहीं हूँ
Written By :
रेनू खन्ना

सुनो, मैं अकेला नहीं हूँ

प्रथम संस्करण



लेखिका
रेनू खन्ना

Title of the Book: सुनो, मैं अकेला नहीं हूँ

First Edition – 2026

Copyright 2026 © रेनू खन्ना

इस पुस्तक के किसी भी भाग को कॉपीराइट धारकों की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, चाहे वह इलेक्ट्रॉनिक हो या यांत्रिक, जिसमें फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण एवं पुनर्प्राप्ति प्रणाली का उपयोग शामिल है, पुनरुत्पादित या प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Disclaimer
इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री के लिए लेखक पूर्णतः जिम्मेदार हैं। प्रकाशक किसी भी प्रकार से इसके लिए कोई जिम्मेदारी नहीं लेते हैं। यदि कोई त्रुटि हो, तो वह पूर्णतः अनजाने में हुई है। पाठकों से अनुरोध है कि भविष्य में ऐसी विसंगतियों से बचने के लिए वे ऐसी त्रुटियों की सूचना लेखक या प्रकाशक को दें।

E-ISBN: 978-81-6774-647-4

MRP Rs. 160/-

Publisher, Printer & Distributor:
Selfypage Developers Pvt Ltd.,
Pushpagiri Complex,
Beside SBI Housing Board,
K.M. Road Chikkamagaluru, Karnataka.
Tel.: +91-8861518868
E-mail: info@iipbooks.com

IMPRINT: IIP Iterative International Publishers

For Sales Enquiries:
Contact: +91- 8861511583
E-mail: sales@iipbooks.com

परिचय

रेनू खन्ना मूल रूप से शब्दों की दुनिया में रमी एक संवेदनशील लेखिका हैं। उनका मानना है कि जो बातें ज़ुबान से बयान नहीं हो पातीं, उन्हें शब्दों में ढालकर कागज़ पर उतार देना स्वयं ईश्वर का एक आशीर्वाद है। लिखना हमेशा से ही उनका प्रिय शौक रहा है, जिसे उन्होंने अपनी पहली पुस्तक "सुनो, मैं अकेला नहीं हूँ" के रूप में पाठकों के सामने रखा है। जीवन को गहराई से महसूस करना और उन अहसासों को कागज़ पर उतार देना उन्हें बेहद पसंद है। इस किताब के माध्यम से उन्होंने बड़ी ही सहजता से उस ईश्वरीय शक्ति की ओर इशारा किया है जो हर सुख-दुख में हमारे साथ साये की तरह रहती है।

लेखिका का मानना है कि जब इंसान दुनिया की भीड़ में खुद को अकेला महसूस करता है, असल में तब वह ईश्वर के सबसे करीब होता है।

रेनू खन्ना ने इस किताब के माध्यम से उस अदृश्य मगर अटूट सहारे की बात की है जो हमें कभी तन्हा नहीं होने देता। अपनी इस पहली कृति के ज़रिए वह हर पाठक के दिल में एक सकारात्मक विश्वास जगाना चाहती हैं। यह प्रयास हर उस व्यक्ति के लिए मरहम की तरह है जो ज़िंदगी के किसी भी मोड़ पर खुद को अकेला महसूस करता है।

श्रीमती रेनू खन्ना, सनराइज पब्लिक स्कूल, रोहिणी, नई दिल्ली की रिटायर्ड प्रिंसिपल भी रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र मे लंबे अनुभव के साथ साथ उनका यह साहित्यिक प्रयास उनके गहरे जीवन दर्शन को दर्शाता है।

Preface (बात दिल से — भूमिका)

यह पुस्तक कोई प्रवचन नहीं है। यह कोई भारी-भरकम धार्मिक ग्रंथ भी नहीं है। यह बस एक छोटी-सी कोशिश है... आपको आपसे मिलाने की, और आपको उससे मिलाने की जो हमेशा से आपके भीतर और आपके साथ है।

आज हम सब दौड़ रहे हैं... कहीं न कहीं, किसी न किसी चीज़ के पीछे। फोन की बैटरी तो हम 100% रखते हैं, लेकिन मन अक्सर 10% पर ही चलता रहता है। सोशल मीडिया पर सैकड़ों लोग जुड़े होते हैं, पर दिल की बात कहने के लिए एक भी ऐसा कंधा नहीं मिलता, जहाँ बिना डर के रो सकें। गूगल से हम हर सवाल पूछ लेते हैं, पर "मैं खुश क्यों नहीं हूँ?" इसका जवाब शायद गूगल के पास भी नहीं है।

मैं भी आपकी तरह ही भटक रही थी। कभी मंदिर गई, कभी गुरुद्वारे... पर कहीं भी मन टिकता नहीं था। प्रार्थना करती थी, पर अंदर से लगता था जैसे कोई सुन ही नहीं रहा। फिर एक दिन... कुछ बदला नहीं, बस एक एहसास हुआ। और उस एहसास ने सिखाया — मैं अकेली नहीं हूँ। उस दिन समझ आया, ईश्वर डराने नहीं आता, ना ही वह डाँटने आता है... वह तो बस चुपचाप पास बैठने, और धीरे से गले लगाने आता है।

इस पुस्तक में आपको कोई उपदेश नहीं मिलेगा। न कोई बड़ी बातें, न कोई भारी ज्ञान। बस कुछ छोटे-छोटे किस्से होंगे, कुछ सच्चे एहसास होंगे... और शायद कहीं बीच में आपको आपका खोया हुआ सुकून मिल जाए।

— आपकी दोस्त

Table of Content

Sl. No	Chapter Name	Page No.
अध्याय 1	जब गूगल भी जवाब न दे	1-4
अध्याय 2	डीपी में नहीं, दिल में देखो	5-8
अध्याय 3	जब दिल थक जाता है	9-11
अध्याय 4	पाँच मिनट वाला भगवान	12-14
अध्याय 5	शिकायत से शुक्राना तक का सफ़र	15-18
अध्याय 6	वह मुझे कहाँ मिलेगा?	19-22
अध्याय 7	खोना और पाना	23-29
अध्याय 8	सब्र	30-33
अध्याय 9	अजनबी	34-38
अध्याय 10	छोड़ना सीखो	39-42
अध्याय 11	पाँच रुपये वाला भगवान	43-46

अध्याय 12	डर के आगे भगवान है	47-50
अध्याय 13	समर्पण की बूँदें	51-54
अध्याय 14	माफ़ी	55-58
अध्याय 15	प्रार्थना	59-62
अध्याय 16	संकेत	63-67
अध्याय 17	शांति का द्वार	68-72
अध्याय 18	सच्चा साथी	73-76
अध्याय 19	इंसाफ़	77-81
अध्याय 20	अधूरी कहानी का सौंदर्य	82-86
अध्याय 21	दर्द भी प्रसाद है	87-91
अध्याय 22	भगवान का टाइम टेबल	92-95
अध्याय 23	तलाश	96-100

परिचय: रेनू खन्ना मूल रूप से शब्दों की दुनिया में रमी एक संवेदनशील लेखिका हैं।

उनका मानना है कि जो बातें जुबान से बयान नहीं हो पाती, उन्हें शब्दों में ठालकर कागज पर उतार देना स्वयं ईश्वर का एक आशीर्वाद है। लिखना हमेशा से ही उनका प्रिय शौक रहा है, जिसे उन्होने अपनी पहली पुस्तक "सुनो, में अकेला नहीं हूँ" के रूप में पाठकों के सामने रखा है।

जीवन को गहराई से महुसूस करना और उन अहसासों को कागज पर उतार देना उन्हें बेहद पसंद है। इस किताब के माध्यम से उन्होंने बड़ी ही सहजता से उस ईश्वरीय शक्ति की और इशारा किया है जो हर सुख-दुख में हमारे साथ साये की तरह रहती है।

लेखिका का मानना है कि जब इंसान दुनिया की भीड़ में खुद को अकेला महुसूस करता है, असल में वब वह ईश्वर के सबसे करीब होता है।

रेनू खन्ना ने इस किताब के माध्यम से उस अदुश्य मगर अगुट सहारे की बात हते है जो हमें कभी तन्हा नहीं होने देता। अपनी इस पहली कृति के जरिए वह हर पाठक के दिल में एक सकारात्मक विश्वास जगाना चाहती है। यह प्रयास हर उस व्यक्ति के लिए मरहम की तरह है जो जिंदगी के किसी भी मोड़ पर खुद को अकेला महसूस करता है।

श्रीमती रेनू खन्ना सनराइज पब्लिक स्कूल, रोहिणी, नई दिल्ली की सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या (Retired Principal) भी रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में लंबे अनुभव के साथ-साथ उनका यह साहित्यिक प्रयास उनके गहरे जीवन-दर्शन को दर्शाता है।

E ISBN:978-81-6774-647-4

Selfypage Developers Pvt Ltd

MRP Rs. 160/-